

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

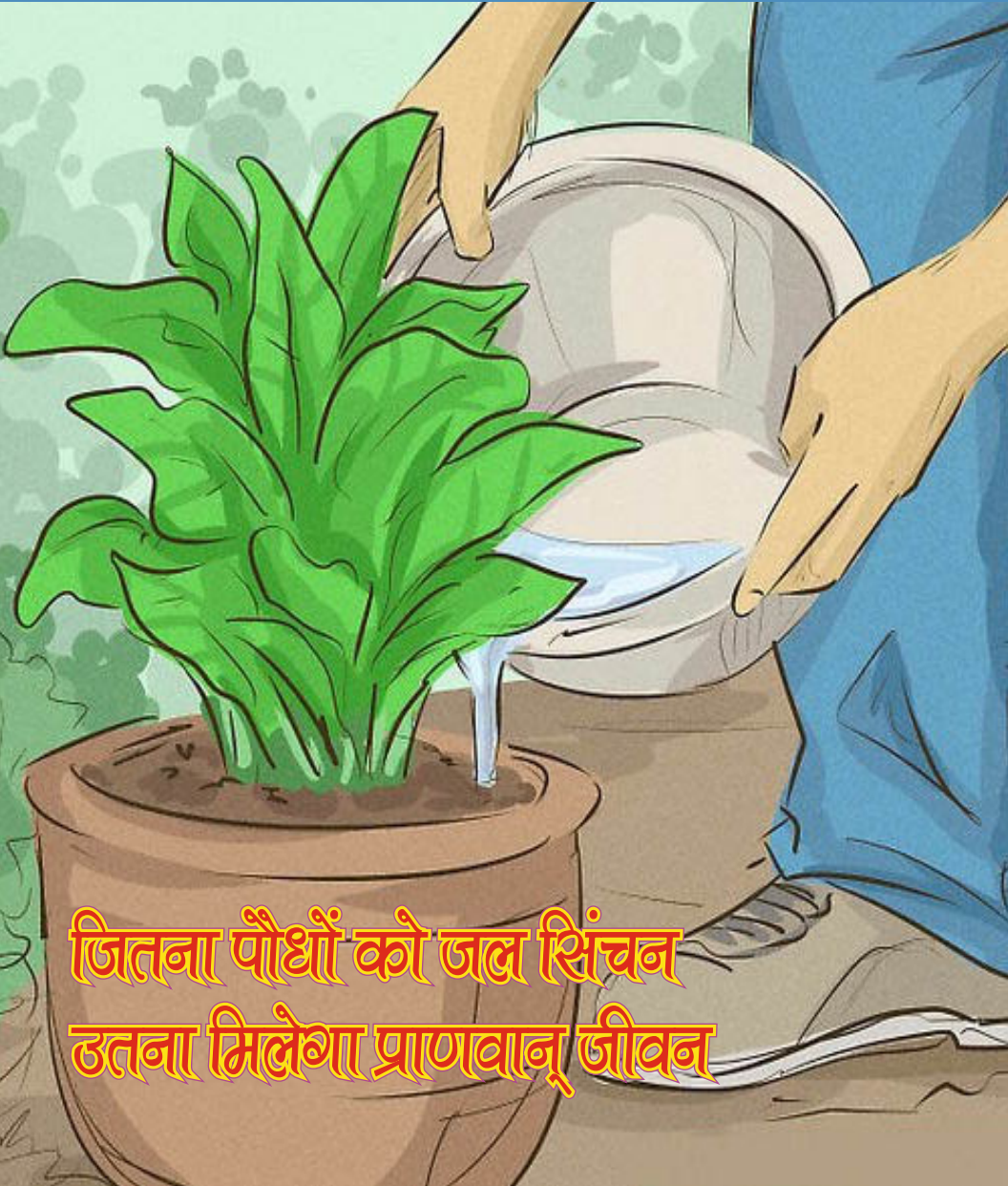
वर्ष 25

अंक 06

जुलाई, 2019
मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार - सद्विचार - सत्संस्कार



जितना पौधों को जल सिंचन
उतना मिलेगा प्राणवान् जीवन

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्बिचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :

साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :

श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :

अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :

श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये

आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक

अरुण तिवारी

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)

पोस्ट बॉक्स नं. : 3240

सराय काले खॉ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013

फोन नं. : 26345550, 26821348

Website : www.rooprekha.com

E-mail : contact@manavmandir.info



इस अंक में

अपनी प्रार्थना पर स्वयं का विश्वास होना जरूरी है

विश्वास जोड़ता है, संशय तोड़ता है। संशय परमात्मा, आत्मा, धर्म आदि से ही दूर नहीं करता है, घर-परिवार-समाज से भी अलग कर देता है। इतना ही नहीं, अपने आप से भी काट देता है। प्रार्थना भी विश्वास है। उसका ठोस संबंध उस क्षण से है, जिसे हम जी रहे हैं। उस क्षण पर अगर हमारा विश्वास नहीं है तो हमारा विश्वास उस जीवन पर कैसे होगा, जिसको हमने जिया है या जिसे हमें जीना है। जब वर्तमान जीवन पर ही विश्वास नहीं होगा, फिर अपने अस्तित्व पर विश्वास कैसे होगा।

05

धर्म जीवन के सुख और शांति का आधार है धर्म है जीवन का परम विज्ञान

कुछ लोग धर्म के नाम से नफरत करते हैं। ऐसा क्यों? धर्म कोई नफरत करने का तत्व नहीं है। धर्म तो व्यक्ति के लिए भोजन, पानी और श्वास से भी ज्यादा आवश्यक है। धर्म तो जीवन का परम विज्ञान है। जीवन जीने की कला है। जीवन की सुख और शांति का एक मात्र आधार है। जीवन की पवित्रता का मूलतंत्र है। ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति वास्तव में उससे नफरत कैसे करे। उससे नफरत करने का अर्थ होगा- जीवन से नफरत करना, जीवन की पवित्रता से नफरत करना।

08

ऊर्जा का स्रोत है स्वस्तिक

सृष्टि चक्र सतत गतिशील है और गति की दिशा बाएं से दाएं पूर्व से दक्षिण फिर पश्चिम तथा उत्तर से चलकर पुनः पूर्व में वृत्त पूरा होता है इसे क्लोकवाइज कहते हैं। प्रत्येक भुजा के सिरे समकोण बनाने वाली रेखाएं अनन्त हैं। जिनका कोई स्पर्श या संधि बिन्दु नहीं है। यही अनन्त ब्रह्माण्ड का द्योतक है।

20

एक अनार के अनेक फायदे

आदिवासियों की मान्यता के अनुसार जिन महिलाओं को मातृत्व प्राप्ति की इच्छा हो, अनार की कलियां उनके लिए वरदान की तरह है। इन आदिवासियों के अनुसार अनार की ताजी, कोमल कलियां पीसकर पानी में मिलाकर, छानकर पीने से महिलाओं में गर्भधारण की क्षमता में वृद्धि होती है।

लगभग 10 ग्राम अनार के पत्तों को आधा लीटर पानी में उबालें, जब यह एक चौथाई शेष बचे तो इस काढ़े से कुल्ला करने से मुंह के छालों में लाभ होता है।

25

देहं छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत ।
ते ज्ञानी नां चरण मां, हो वन्दन अगणित ॥

बोध-कथा

तीर्थ से बड़ा पुण्य

सन् 1846-47 में अवध के जिले गोंडा और बहराइच का पट्टा राजा दर्शन सिंह के पुत्र राजा रघुवर सिंह के पास था। रघुवर सिंह को अवध के इतिहास के क्रूरतम लोगों में गिना जा सकता है। उसकी फौज रोजाना किसानों या व्यापारियों को पकड़ लाती और मनपसंद नजराना मांगती। जो भी नजराने में आनाकानी करता, उसकी दाढ़ी में गीला गन पाउडर लगा दिया जाता। जब जन पाउडर सूख जाता तो दाढ़ी में आग लगा दी जाती। एक बार रघुवर सिंह अपनी फौज लेकर बोंदी रियासत पहुंच गया। उसने रियासत का बाजार लूट लिया और बड़ी संख्या में व्यापारियों-दुकानदारों को बंदी बना लिया। इसके बाद उसने रियासत के तमाम कस्बों में लूटपाट की और पंद्रह सौ पुरुषों के साथ तकरीबन पांच सौ औरतें-बच्चे कैद कर लिए। सभी को बसंतपुर लाया गया, जहां तय किया गया कि इन्हें तब तक यातनाएं दी जाएं, जब तक यह उनका मनपसंद काम करने को

तैयार न हो जाएं। इसी दौरान दूसरे जिले का एक सिपाही आत्माराम अपने परिवार के साथ तीर्थयात्रा पर निकला। उसने गया में चढ़ावे और पूजा के लिए काफी धन जोड़ रखा था। जब वह बसंतपुर से गुजरा तो उसे उन कैदियों के बारे में पता चला। उसने और उसके परिवार ने गया में पूजा के लिए जितनी रकम जोड़ी थी, सब आतताइयों को दे दी और एक निश्चित संख्या में औरतों और बच्चों को आजाद करा लिया। आत्माराम सबको लेकर वहीं से वापस लौट पड़ा। किसी ने पूछा कि 'तुम्हारी तीर्थयात्रा तो अधूरी रह गई। गया जाकर जिन पूर्वजों को पिंड देने वाले थे, उसका क्या?' आत्माराम ने निश्चित भाव से कहा- 'इतने बेकसूर लोगों को कैद की यातनाओं से मुक्त कराने का जो पुण्य मेरे नाम जुड़ा है, भगवान उसी से मेरी अधूरी तीर्थयात्रा का दोष माफ करेंगे और उसी से हमारे पूर्वजों का उद्धार भी करेंगे।'

कहीं व्याख्या में तो भूल नहीं कर दी तुमने

कल रात मैं एक जर्मन कवि हेनरिक हेन के संबंध में मैं पढ़ रहा था। हेनरिक हेन थोड़े से उन अद्भुत सृजनात्मक कवियों में से एक हुआ, जिन्होंने जीवन के सौंदर्य के बड़े अनूठे गीत गाये हैं। वो जर्मनी के बहुत बड़े दार्शनिक- बड़े-से-बड़े दार्शनिक हीगल- से मिलने गया था। अमावस की अंधेरी रात थी और आकाश में तारे सुंदर फूलों की तरह फैले थे। वे दोनों खिड़की पे खड़े थे और हेनरिक हेन ने तारों की प्रशंसा में एक गीत गाया भावविभोर होकर। उसके स्वर गूंजने लगे उस सन्नाटे में। ओर उसने उन तारों की प्रशंसा में बहुत-सी बातें कहीं। हीगल चुपचाप खड़ा सुनता रहा और जब गीत बंद हो गया तो उसने कहा- बंद करो ये बकवास। मुझे तो तारों को देखकर हमेशा श्वेत कोढ़ की याद आती है। आकाश का सफेद कोढ़। तुमने कभी सोचा? सफेद कोढ़!

हेनरिक हेन ने लिखा है कि मैं तो एकदम सकते में आ गया। ये प्रतीक मेरे ख्याल में भी कभी न आया था। लेकिन सफेद कोढ़ की तरह भी देखे जा सकते हैं तारे। देखने वाले पे निर्भर है। अगर तुम्हें ये समझ में आ जाए, तो सफेद कोढ़ भी कोई चांदनी के फूलों की तरह देख सकता है। वो भी देखने वाले पे निर्भर है।

जगत में कोई व्याख्या नहीं है। जगत निर्व्याख्य है। व्याख्या तुम डालते हो। आकाश में तारे फैले हैं। कहो सफेद कोढ़, तो जगत इनकार न करेगा। कोई परमात्मा का हाथ न उठेगा कि गलती हुई तुमसे। कोई तुम्हें सुधारने, ठीक करने न आयेगा।

लेकिन ध्यान रखना, तारे तुम्हारे उस बक्तव्य के कारण कोढ़ न हो जाएंगे, लेकिन तुम कोढ़ से घिर जाओगे। जिसको आकाश के तारों में कोढ़ दिखायी पड़ेगा, वो चारों तरफ कोढ़ से घिर न जाएगा! उसके देखने का ढंग उसके जीवन को कुरूप न कर जाएगा! जिसको चांद-तारों में भी कोढ़ दिखायी पड़ता हो, फिर उसे सौंदर्य कहां दिखायी पड़ेगा? असंभव। उसके जीवन में कुरूपता-ही-कुरूपता होगी और वो चिल्ला-चिला के कहेगा कि जैसे मेरे भाग्य में विषाद लिखा है। ये तुमने ही लिख लिया। ये व्याख्या तुम्हारी है। चांद-तारों ने कहा न था कि हमारी ऐसी व्याख्या करो। चांद-तारों पर कोई भी व्याख्या नहीं लिखी है। निर्व्याख्य, अनिर्वचनीय तुम्हारे द्वार पर खड़े हैं, तुम व्याख्या देते हो।

वही हेनरिक हेन भी खड़ा उनकी स्तुति में गीत गा रहा था। उसके गीत ऐसे सुंदर हैं जैसे वेद की ऋचाएं। उसके गीतों में ऐसी महिमा है जैसे कभी-कभी थोड़े-से ऋषियों के वक्तव्यों में होती है। मगर उस हेनरिक हेन की मौजूदगी भी हीगल को न डिगा सकी। वो खड़ा सुनता रहा। बड़ी बेचैनी से सुना होगा उसने ये गीत। बड़ी नाखुशी से सुना होगा ये गीत। बड़े विरोध से सुना होगा। बर्दाश्त किया होगा। शिष्टाचार के कारण सुना होगा। क्योंकि जिसको कोढ़ दिखायी पड़ता हो उसको ये सब गीत झूठे मालूम पड़े होंगे। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं, अगर तुम्हें विषाद मालूम पड़े तो थोड़ा सोचना, कहीं तुमने व्याख्या में भूल कर ली।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के पत्रचन-सारांश

○ रुचि आनंद



अपनी प्रार्थना पर स्वयं का विश्वास होना जरूरी है

भगवान के दरबार में भीड़ दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। हम सभी प्रार्थना की मुद्रा में कहीं न कहीं हाथ जोड़े हुए हैं। आधुनिकता, वैज्ञानिकता और प्रगतिशीलता के साथ प्रार्थना का ऐसा तालमेल शायद ही कभी दिखाई दिया हो। कभी-कभी यह आभास होता है कि लोगों की धर्म और भगवान में आस्था मजबूत होती जा रही है। अलग-अलग धाराएं अब साथ-साथ चलने के लिए एकमत हो रही हैं। यह साझापन एक अच्छा संकेत है। लेकिन यहां सवाल भी खड़े हो रहे हैं कि क्या प्रार्थना हमें

मानवीय होने का पाठ पढ़ा पा रही है। यह भी कि प्रार्थना में हमारा विश्वास कितना है।

मुझे ऐसे कितने ही भक्त मिले जो मंदिर सिर्फ इसलिए जाते हैं ताकि वे ईश्वर से शिकायत कर सकें कि उनकी प्रार्थना अभी तक कबूल क्यों नहीं हुई। यह जीवन का एक अजीब विरोधाभास है। आदमी श्रम तो कर रहा है, लेकिन उसका सारा उपक्रम गढ़ा भरने का नहीं, गढ़ा खोदने का है। सच तो यह है कि वह अपने मन के तल पर अशांत है, इसलिए उसकी प्रार्थना में नाराजगी का भाव है। उसमें संशय और अविश्वास है। वह भूल जाता है कि प्रार्थना अगर आस्थापूर्ण हो तो उसका असर होता ही है। अनास्थापूर्ण प्रार्थना का कोई लाभ नहीं होता, चाहे वह पूरी धरती और आसमान को गुंजाने वाली ही क्यों न हो। कमी सिर्फ पुकार की होती है, प्रभाव की नहीं। कमी आस्था, विश्वास और संकल्प की होती है।

दरअसल हमारे भीतर का संशय और अविश्वास ही हमें कहीं पहुंचने नहीं दे रहा है। हमारा न अपने कदमों पर विश्वास है, न अपनी राहों पर, न अपनी मंजिल पर और न ही अपने आप पर। फिर कहीं पहुंचे

तो कैसे पहुंचे। हम यह याद रखें कि आस्था स्वयं सुख है। संशय स्वयं दुख है। आस्था से ही विश्वास जुड़ा है। विश्वास से ही हम जुड़े हैं। पूरी सृष्टि परस्पर विश्वास से ही जुड़ी हुई है। इसके टूटते ही सृष्टि की अखंडता भी टूट जाती है। पूरा अस्तित्व बिखर जाता है। हमारी एकात्मता जहां तक है, वह सारी आस्था और विश्वास से ही गुंथी हुई है। भाई-भाई के बीच, व्यक्ति और समाज के बीच, गुरु-शिष्य के बीच, मित्र-मित्र के बीच, पति और पत्नी के बीच, व्यक्ति और राष्ट्र के बीच जितना भी, जहां भी जोड़ है, जो एकात्मता है, वह सब इसी का परिणाम है। प्रेम की बुनियाद में भी विश्वास का ही ईंट-गारा होता है। विश्वास टूटा कि प्रेम टूटा।

विश्वास जोड़ता है, संशय तोड़ता है। संशय परमात्मा, आत्मा, धर्म आदि से ही दूर नहीं करता है, घर-परिवार-समाज से भी अलग कर देता है। इतना ही नहीं, अपने आप से भी काट देता है। प्रार्थना भी विश्वास है। उसका ठोस संबंध उस क्षण से है, जिसे हम जी रहे हैं। उस क्षण पर अगर हमारा विश्वास नहीं है तो हमारा विश्वास उस जीवन पर कैसे होगा, जिसको हमने जिया है या जिसे हमें जीना है। जब वर्तमान जीवन पर ही विश्वास नहीं होगा, फिर अपने अस्तित्व पर विश्वास कैसे होगा।

फिर कैसे सुनी जाएगी हमारी वह प्रार्थना, जो संशय की आंखों से की जाएगी। अगर आज इतनी प्रार्थनाओं के बाद भी अमानवीयता की पकड़ मजबूत हो रही है तो यह मान लेना चाहिए कि हम अंदर से कुछ हैं और बाहर से कुछ और हैं। यह दोहरापन ही सभ्यता को कमजोर कर रहा है।

कोई भी काम करना हो तो

पहले मन की सलाह लें

एक लड़का सुबह-सुबह मेरे पास आया। वह परेशान था। आते ही बिना किसी भूमिका के खुद के बारे में पूछा कि 'मुझे आगे क्या करना चाहिए? क्या ठीक रहेगा-पढ़ाई या बिजनेस?' उसके इस सवाल से मैं चौंक गया। यह तो उसकी अपनी रुचि से जुड़ा मामला है। खुद का फैसला ही मायने रखता है। उसने यह भी बताया, 'घर वाले चाहते हैं कि पारिवारिक व्यापार को संभाल लूं क्योंकि इसी में भविष्य है। इसमें पैसे भी हैं जबकि मैं पढ़कर कुछ बड़ा काम करना चाहता हूं।'

बात समझ में आ गई कि लड़का असमंजस की स्थिति में है। यह असमंजस दोहरे स्तर पर सक्रिय है। पिता के सुझाव से इनकार है लेकिन अपनी रुचि का खयाल भी है। यह स्थिति उस एक लड़के की नहीं है, ज्यादातर का यही हाल है।

फ्रस्ट्रेशन और असफलता की कहानी यहीं से शुरू होती है। इसलिए पहले इस पर विचार करना चाहिए कि अपना मन क्या कहता है और क्या चाहता है। लेकिन मुश्किल यह है कि लोग अपने मन की नहीं सुनते हैं, किसी न किसी के दबाव में आकर फैसला करने के लिए बाध्य होते हैं। जब ऐसी दुविधा की स्थिति हो तो दूसरों के अनुभवों को जानने-समझने की कोशिश जरूर करनी चाहिए।

दुनिया की श्रेष्ठ भारतीय मुक्केबाज मेरी कॉम का उदाहरण सामने है कि अगर वह अपने पिता के दबाव में आ जाती तो वह आज जो है, वह नहीं हो पाती। लेकिन उसने अपने मन की सुनी। उस मन के भीतर बैठा हुआ था उसका आत्मविश्वास और जुनून। ऐसे उदाहारण दुनिया में भरे पड़े हैं। हम महापुरुषों के जीवन को खंगालने का प्रयास करेंगे तो उसका दोहरा लाभ मिलेगा। उनसे रास्ता तो मिलेगा ही, अपने असमंजस से भी मुक्ति मिलेगी। हर महापुरुष अपने संक्रमण काल की उपज होते हैं। उन्होंने अपनी एक दृष्टि बनाई और उसी धरातल से काम करना शुरू किया। हर किसी का जीवन बताता है कि उन्होंने खुद से ही सवाल किया कि उन्हें क्या करना चाहिए। बुद्ध ने घर छोड़ा, महावीर ने राजपाट का मोह त्यागा, गांधी ने

बैरिस्टरी छोड़कर देश को आजाद कराने का संकल्प लिया। समाज को सुधारने या बदलने के लिए कौन सा रास्ता अपनाना श्रेयस्कर रहेगा, इस विचार को उन सबने पहले मन के स्तर पर जांचा-परखा, फिर फैसला किया।

समाज उनकी साधना और तपस्या के बारे में जानता है, लेकिन यह जानने की कोशिश नहीं करता कि उनकी सोच कैसे सक्रिय हुई। कैसे 'स्व' को हासिल करने के बाद 'पर' को अपना लक्ष्य बनाया। हम उन सबको सिर्फ पढ़ते और रटते हैं, उन्हें समझने में या तो अपना मन नहीं खर्च करते या दिलचस्पी नहीं दिखाते। शायद हमें पता है कि उन जैसा जीवन जीना या उनकी राह पर चलना एक कठिन चुनौती की तरह है। इसलिए हम आसान रास्ता चुनते हैं। खुद का रूपांतरण करने से बचते हैं। मूलतः हम यथास्थितिवाद के पोषक हैं। लीक पर चलने के आदी हैं। एक बार हम सब अपनी दृष्टि बदलकर देखें तो महसूस होगा कि जीवन के सारे संदर्भ बदल रहे हैं। संदर्भ बदलते ही अर्थ और अर्थ बदलते ही मन की सतह पर सकारात्मक परिवर्तन की लहर शुरू हो जाएगी। तब मन आपको अपना फैसला बता देगा कि क्या सही रहेगा और क्या गलत। कोई भी काम करें, पहले अपने मन से ही सलाह लें।

धर्म जीवन के सुख और शांति का आधार है



त्याग, संयम और चरित्र भारतीय जीवन के ये तीन आदर्श रहे। धन भारतीय जीवन का आदर्श कभी नहीं रहा है। जीवन चलाने के साधन से अधिक प्रतिष्ठा उसको कभी नहीं दी गई। जीवन मूल्यों के रूप में सर्वोच्च प्रतिष्ठा त्याग, संयम और चरित्र को ही मिली। ये ही बे तत्व हैं, जिनके कारण भारत का मस्तक सदा ऊंचा रहा है। भारतीय ऋषि-मुनियों ने इन तीनों तत्वों को जीकर जीवन मूल्यों के रूप में प्रतिष्ठित किया था। विदेशी लोग यहां त्याग, संयम और सच्चरित्र की शिक्षा लेने आते थे और

○ पवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

इन्हें प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक समझते थे। मेरी दृष्टि में त्याग, संयम और चरित्र भारतीय लोगों की मूल सम्पत्ति की उपेक्षा कर रहे हैं। उसका मूल्य कम करके आंक रहे हैं। यह सचमुच ही एक अनिष्ट प्रसंग है, गंभीर चिंतन का विषय है। मैं भारतीयों से बहुत आग्रहपूर्वक कहना चाहती हूं कि वे अपनी त्याग, संयम और सच्चरित्रमूलक संस्कृत का यथार्थ मूल्यांकन करें। उसका संरक्षण करना उनका सबसे बड़ा कर्तव्य है। आज युग की स्थिति पर जब हम दृष्टिपात करते हैं, तो यह बहुत स्पष्ट रूप से प्रतिभासित होता है कि नैतिकता का अत्यधिक पतन हुआ है। मानव अपनी मानवता को भूलता चला जा रहा है। यह त्याग और संयम मूलक सांस्कृति परम्परा को भूलने का ही दुष्परिणाम है। इस पतन से बचाकर मनुष्य को विकास के पथ पर अग्रसर करने के लिये त्याग और-संयममूलक संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में यह कार्य मानव धर्म के आचरण से ही संभव है। मानव धर्म त्याग, संयम और सदाचार का ही नाम है।

धर्म है जीवन का परम विज्ञान

कुछ लोग धर्म के नाम से नफरत करते हैं। ऐसा क्यों? धर्म कोई नफरत करने का तत्व नहीं है। धर्म तो व्यक्ति के लिए भोजन, पानी और श्वास से भी ज्यादा आवश्यक है। धर्म तो जीवन का परम विज्ञान है। जीवन जीने की कला है। जीवन की सुख और शांति का एक मात्र आधार है। जीवन की पवित्रता का मूलतंत्र है। ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति वास्तव में उससे नफरत कैसे करे। उससे नफरत करने का अर्थ होगा- जीवन से नफरत करना, जीवन की पवित्रता से नफरत करना। वास्तव में जो लोग धर्म से नफरत करते हैं वे धर्म के नाम पर चलने वाली अंधरुढ़ता, अज्ञान, दंभचर्या और छलना से नफरत करते हैं। तथाकथित धार्मिकों का जीवन और जीवन व्यवहार उनके मन में नफरत की भावना पैदा करने का मूलभूत कारण है। यदि धार्मिक कहलाने वाले लोगों का जीवन धर्म

के मौलिक स्वरूप के अनुरूप हो तो यह नफरत की भावना कभी पैदा नहीं हो सकती। इसलिए धार्मिक कहलाने वाले लोगों के लिए यह अत्यंत आत्मालोचन का विषय है कि वे लोग इस स्थिति पर गहराई से ध्यान देकर अपने जीवन की धारा को सही दिशा में मोड़ें। इससे ही धर्म के प्रति पैदा होने वाली धृणा की स्थिति समाप्त हो सकेगी और उससे भी अधिक उनका स्वयं का जीवन सार्थक हो सकेगा। वे जीवन जीने का सच्चा आनंद प्राप्त कर सकेंगे।

स्वयं से शुभ शुरुआत

मैं मानती हूँ, जो लोग देश में नैतिकता के दुर्भिक्ष को मिटाना चाहते हैं, मानवता को पुनः ससम्मान प्रतिष्ठित करना चाहते हैं, वे स्वयं से इस कार्य की शुभ शुरुआत करें। स्वयं नैतिकता एवं मानवता के सांचे में ढलें और जन-जन को उस दिशा में प्रेरित करें।

ऋषिराज

गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में मानव मंदिर की बालिकाओं द्वारा गाया गया

ऋषिराज आपका मानव मंदिर लहलहाएगा
सबका हृदय लुभाएगा
आपका गौरव गाएगा।

- (1) इस कल्युग में आप सरीखे गुरुवर हमने पाए
दर्शो दिशाएं चरण पखारे अभिनव गीत सुनाए
खुशियों के घुंघरू बजाते हैं गूंगा गाएगा
- (2) सस्य श्यामला इस धरती के उर्वर रूख बनाया
संस्कारों का सिंचन देकर ज्ञानामृत बरसाया

युगयुग आभारी है सारे सुयश सजाएगा।

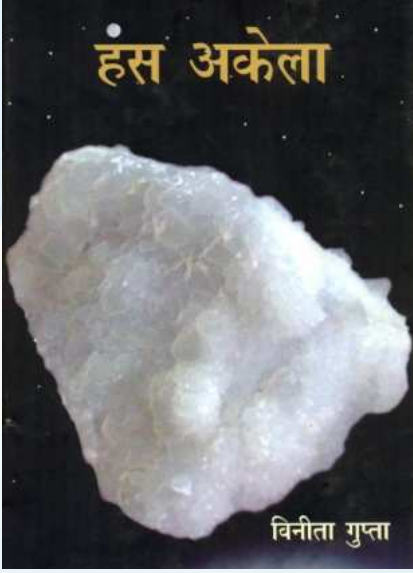
(3) मधुर-मधुर मुस्कान आपकी और सादगी भाए
पर धरती पर जाकर के बीज धर्म के बोए
सारी दुनियां न्यौछावर है नजर उतारेगा।

(4) आज विदाई और बधाई का यह अवसर आया
मानव मंदिर में भक्तों ने कैसा रंग जमाया
युग-युग जीओ आप धरा पर रंग बरसायेगा।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता



बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ तो पता चला कि जे. कृष्णमूर्ति पिछले पन्द्रह दिनों से बम्बई में ही हैं। मुनि जी के मन में उनसे मिलने की इच्छा जाग उठी। जल्दी ही उन्हें कृष्णमूर्ति से समय भी मिल गया। पहुँचे तो देखा फर्श पर बिछी चटाइयाँ, सादगी का आलम। मुनि जी के मन में बहुत से बिन्दु थे उनसे चर्चा के लिए। उन्होंने परम्परामुक्त चेतना से अपनी चर्चा शुरू की-

‘आत्मानुभव के लिए आप कौन-सा मार्ग सुझाना पसंद करेंगे?’

मुनि जी के प्रश्न ने जैसे उन्हें भीतर तक तड़पा दिया था। तिलमिलाते हुए बोले- ‘मुनि जी, आप महावीर या कृष्णमूर्ति के माध्यम से नहीं, आत्मानुभव अपने से पाने की कोशिश करें। यदि ऐसा नहीं हुआ तो आप महावीर या कृष्णमूर्ति को अवश्य पालेंगे, खुद को नहीं।’

इस पर मुनि जी बोले- ‘प्रश्न तो यही है कि अपने खुद को कैसे पाया जाए?’

‘आप जो सवाल मुझसे पूछ रहे हैं, वह अपने आप से पूछें, पूरी समग्रता से पूछें। उत्तर स्वयं भीतर से आएगा और वह उत्तर ही सही होगा। दूसरों से पाए हुए उत्तर कभी सही नहीं होते।’ कृष्णमूर्ति ने कहा।

अभी बात चल ही रही थी, चल क्या

गतांक से आगे-

दोपहर का समय था, मुनि जी अंग्रेजी भाषा का अपना अध्ययन कर वर्डस्वर्थ को पढ़ रहे थे। पढ़ते-पढ़ते उनके मानस में कॉलरिज की पंक्तियाँ घूम रही थीं- ‘Poetry is an spontaneous overflow of powerfull feelings, that takes its origin in tranquility’ अपनी काव्य-सृजन प्रक्रिया में मुनि जी इस बात को गंभीरता से महसूस करते थे। अभी उन्होंने किताब खोली ही थी कि एक सज्जन आ गए। मुनि जी ने उन्हें बिठाया फिर

रही थी, शुरू ही हुई थी कि अचानक चार-पाँच व्यक्तियों ने कमरे में प्रवेश किया। वे स्ट्रेचर पर एक बेहोश लड़की को लाए थे। चेहरों पर तनाव की रेखाएं खिंची देखी जा सकती थीं। लड़की को बगल के कमरे में लिटा दिया गया। कृष्णमूर्ति ने क्षमा माँगते हुए अगले दिन तक के लिए चर्चा स्थगित कर दी और अविलम्ब उस कमरे में चले गए।

लड़की को लेकर आए व्यक्तियों में से एक ने बताया कि लड़की कई दिनों से अचेतन अवस्था में है। डॉक्टरों को बेहोशी का कोई कारण समझ में नहीं आ रहा है। वे उस लड़की को कृष्णमूर्ति के पास आध्यात्मिक चिकित्सा के लिए लाए हैं।

मुनि जी को अचानक याद आया जो उन्होंने सर्वोदयी नेता विमला ठक्कर की पुस्तक में पढ़ा था। *On an Eternal Voyage* पुस्तक में कृष्णमूर्ति द्वारा की जाने वाली आध्यात्मिक चिकित्सा की चर्चा थी। विमला जी ने उसमें लिखा है कि कान की भयंकर पीड़ा के कारण वर्षों तक उन्हें बुखार रहता था। कानों से मवाद भी बराबर आता था। उन्होंने इस पीड़ा से मुक्ति के लिए बहुत इलाज करवाए, किन्तु पीड़ा कम नहीं हो पाई। अंततः उन्होंने इंग्लैण्ड जाकर कानों की शल्य-चिकित्सा का निर्णय लिया। इसी अवधि में उनका संपर्क जे. कृष्णमूर्ति जी से हुआ। कृष्णमूर्ति जी द्वारा साइकिक हीलिंग की पहली बैठक में उनको काफी आराम हुआ।

शल्य-चिकित्सा का निर्णय स्थगित कर दिया गया। तीन-चार बार ऐसी ही बैठकों से वे संभवतः पूर्णतः रोग मुक्त हो गईं। मुनि जी ने यह प्रसंग पढ़ा था, लेकिन यह नहीं मालूम था कि वे इस तरह की साइकिक हीलिंग आमतौर पर करते हैं।

पाँच-छह दिन बाद मुनि जी की उस लड़की के पिता से भेंट हुई। वे बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। उन्होंने बताया कि लड़की न केवल सचेतन अवस्था में लौट आई है, अपितु काफी हद तक रोग-मुक्त हो गई है। यह सब कृष्णमूर्ति जी की साइकिक हीलिंग का चमत्कार है। किन्तु उन्होंने इसकी चर्चा करने को हमें मना कर रखा है।

उन दिनों मुनि जी के एक सहयोगी मुनि के चेहरे पर बड़े-बड़े सफेद दाग उभर आए थे। अनेक उपचारों के बावजूद वे दाग मिट नहीं पा रहे थे। इस कारण उनका हीन-भावना से ग्रस्त होना स्वाभाविक था। एक दिन मुनि जी ने प्रसंगवश कृष्णमूर्ति से उनकी साइकिक हीलिंग के लिए आग्रह किया। बिना किसी नाज-नखरे के उन्होंने हामी भर ली। यह शर्त अवश्य थी कि उसकी चर्चा किसी के साथ नहीं होगी। इसके पीछे उनकी मंशा उसे छुपाने की नहीं, अपितु सस्ती लोकप्रियता से बचने की थी।

मुनि जी अगले दिन अपने साथी मुनि को लेकर निश्चित समय पर पहुँच गए। उन्होंने मुनि को कुर्सी पर बिठाया। वे खुद उनकी पीठ की ओर खड़े हो गए। अपना

एक हाथ उन्होंने मुनि के सहस्रार केन्द्र पर रखा और दूसरा हाथ चेहरे पर, जहां सफेद दाग थे। लगभग दस मिनट तक वे इसी प्रकार ध्यान मुद्रा में खड़े रहे। फिर उन्होंने युवा मुनि से पूछा- 'क्या आपको किसी प्रकार का स्पन्दन, संवेदन अथवा ऊर्जा-प्रवाह जैसा कुछ अनुभव होता है?' युवा मुनि का उत्तर नकार में था।

कृष्णमूर्ति ने जरा पीछे हटते हुए मुनि जी से कहा- 'चिकित्सा संभव नहीं है, क्योंकि युवा मुनि में संवेदनशीलता-अभिग्रहणशीलता का अभाव है।'

'क्या संवेदनशीलता को जाग्रत नहीं किया जा सकता?' मुनि जी ने पूछा।

इस पर वे बोले- 'हां, ऐसा हो सकता है, किन्तु इसके लिए कई बैठकें लेना जरूरी होता है, जो कि अब संभव नहीं है। क्योंकि दो दिन बाद ही मैं बम्बई छोड़ रहा हूं।' मुनि जी साथी युवा मुनि के साथ वहां से अपने स्थान पर लौट आए।

x x x

एक दिन सुबह-सुबह ध्यान-पाठ आदि से निवृत्त होने के बाद मुनि जी रोज की तरह अखबार लेकर बैठे। आम दिनों की तरह खबरों से भरे अखबार में उनकी नजर एक जगह टिक गई, जिसमें बम्बई में एक अलौकिक पुरुष के आगमन की सूचना थी। यह भी बताया गया था कि उनके स्पर्श मात्र से असाध्य रोग पलक झपकते गायब हो जाते हैं। इस सूचना ने मुनि जी को

चौंकाया कि एक संवाददाता सम्मेलन में उन अलौकिक पुरुष ने अपने स्पर्श मात्र से असाध्य रोग से पीड़ित पत्रकार को ठीक कर दिया। उन अलौकिक पुरुष को भगवान कहकर संबोधित किया गया था। उस सूचना की अंतिम पंक्ति थी- 'किसी भी रोग से मुक्ति पाने के इच्छुक व्यक्ति अमुक तारीख को चार बजे जुहू तट पर समुद्र किनारे भगवान श्री से सम्पर्क करें।'

यहां रोगियों की कमी कहां है? फिर शहरों में तो 'एक ढूंढो, लाख मिलेंगे' कहावत चरितार्थ होती है। एक चश्मदीद गवाह मोहन भाई ने मुनि जी को बताया- 'मुनि जी, सचमुच वहां तो जैसे लोगों का ताँता लग गया। ताँता क्या कहूं, बिल्कुल भीड़ का रेला उमड़ पड़ा। करीब चालीस हजार लोग होंगे वहां पर। अपनी रोग-मुक्ति की कामना से वहां आए हजारों लोग उन भगवानश्री का आशीर्वाद लेने आए थे।'

प्रकृति से जिज्ञासु मुनि जी के मन में अखबार में समाचार पढ़कर जो कुतूहल पैदा हुआ था, वह मोहन भाई की बात सुनकर जिज्ञासा में बदल गया। मुनि जी के मन में आया किसी भी तरह उस अलौकिक पुरुष से सम्पर्क किया जाए। किन्तु प्रश्न यहां आकर अटक गया कि उनसे सम्पर्क हो तो कैसे? इतने भारी-भरकम विज्ञापनों के बावजूद भगवानश्री के आवास या सम्पर्क का कोई सूत्र नहीं दिया गया था, इसे बड़ी कुशलता से गुप्त रखा गया था।

बम्बई जैसा महानगर, जहां समुद्र की लहरों की तरह इंसानों की भीड़ भी ठाठें मारती है, वहां बिना पते-ठिकाने के किसी व्यक्ति को खोज निकालना असंभव नहीं तो दुष्कर अवश्य था। मुनि जी ने अपने मन की इच्छा और दुविधा अपने एक आत्मीय श्री कमल भाई को बतायी, जो धनी और व्यवहारकुशल होने के साथ मेधावी भी थे। उन्होंने मुनि जी को आश्वस्त किया।

‘यह कोई कठिन कार्य नहीं है, बहुत जल्दी मैं उनका पता ठिकाना खोज निकालूंगा।’

तीसरे दिन कमल भाई मुनि जी के पास आए। उन्होंने तथाकथित भगवान का न केवल पता-ठिकाना खोज निकाला था, अपितु उनके साथ दोस्ती भी गाँठ ली थी। उनसे मुनि जी पूछ ही बैठे- ‘यह कैसे संभव हुआ?’

इस पर कमल भाई ने हँसते हुए उत्तर दिया- ‘आज के भगवानों का भगवान पैसा है। इसके बल पर कौन कार्य असंभव है।’- फिर उस भाई ने बताया- ‘वे भगवान उसी सड़क स्थित मकान में ठहरे हैं जिस पर मुनि जी आप हैं। संयोगवश अंतर सिर्फ दस-बारह मकानों का है।’

मुनि जी के दिमाग में पहले तो उन तथाकथित भगवान को जाँचने की बात थी, फिर कहीं अपने साथी युवा मुनि की छवि भी भीतर थी, जिन्हें कृष्णमूर्ति जी के पास वे इलाज के लिए ले गए थे। बस मिलने का समय तय कर लिया गया। उस तय समय के अनुसार मुनि जी अपने साथी मुनि के

साथ, जिनके चेहरे पर सफेद दाग उभर रहे थे, भगवानश्री के पास पहुँचे। श्री कमल भाई भी साथ में थे। उस समय वे एक धनी-मानी व्यक्ति का इलाज कर रहे थे, जिसके रीढ़ में दर्द था। मुनि जी ने गौर से देखा, वे उसकी रीढ़ का स्पर्श ही नहीं कर रहे थे, खूब अच्छे ढंग से मसाज कर रहे थे। आठ-दस दिन से उनका इलाज चल रहा था। थोड़ी देर मसाज के बाद भगवान ने पूछा- ‘क्यों कैसा लग रहा है?’

उन्होंने कुछ सोचकर उत्तर दिया- ‘कुछ-कुछ ठीक लग रहा है।’ यह सुनकर वे फिर बोले- ‘चिन्ता की कोई बात नहीं, बहुत शीघ्र ही पूर्ण आराम हो जाएगा।’ उन्होंने श्रद्धानत हो प्रणाम किया और वहां से चले गए।

अब भगवानश्री फुर्सत में थे, वे मुनि जी की ओर मुखातिब हुए। साथी मुनि भी वहीं बैठे थे। परिचय के अन्तर्गत मुनि जी ने कहा- ‘आपके अलौकिक व्यक्तित्व के बारे में अखबारों में पढ़कर मिलने की उत्कंठा हुई। इसके साथ ही अपने साथी मुनि को इस सफेद दाग के रोग से मुक्ति मिल सके, इस अभिलाषा से भी मिलना चाहता था।’

मुनि जी की बात सुनकर वे गंभीर हो गए। फिर बोले- ‘अभी ऐसा संभव नहीं हो सकता। जब आप मकान में प्रवेश कर रहे थे, मैंने आपके साथी मुनि जी को देख लिया था। तभी मुझे प्रेरणा हुई, इनका उपचार

अभी नहीं। अतः अगली बार जब मैं बम्बई आऊं तब आप मुझसे सम्पर्क करें।’

मुनि जी को बड़ा विचित्र लगा, फिर भी अत्यंत मधुरता से बोले- ‘अगली बार आप कब आएंगे, मैं उन दिनों कहां होऊं, आपसे सम्पर्क हो पाए या नहीं, सब कुछ अनिश्चित है। अभी आप भी यहीं हैं, मैं भी यहीं हूँ। क्यों न अभी यह उपचार किया जाए। फिर आपको करना क्या है, मात्र स्पर्श ही तो करना है। इसमें आपको कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए?’

वे झुंझलाते हुए बोले- ‘सवाल मेरी इच्छा का नहीं है। यह सब कुछ ईश्वरीय इच्छा पर निर्भर है। मैं तो निमित्त मात्र हूँ, ‘उसके’ संकेतों पर काम करने वाला। जब उस प्रेरणा ने अनिच्छा प्रकट कर दी तो मैं कर ही क्या सकता हूँ? इससे पहले आपके समक्ष ही मैंने कैसे असाध्य रोग को क्षणभर में मिटा दिया, यह आप देख ही चुके हैं। किन्तु इस ‘केस’ में उसकी इच्छा के विरुद्ध मैं कुछ भी नहीं कर सकता।’

मुनि जी ने संयत स्वरो में कहा- ‘देखिए आपके दिव्य प्रभाव का प्रमाण तो इसी ‘केस’ में मिल पाएगा। पहले केस में स्पष्ट रोग तो कुछ था नहीं, भीतरी दर्द था। उस पर आपने जिस तरह से मसाज किया, उसमें कुछ आराम तो मिलना ही था। फिर वैसे रोगों में मनोवैज्ञानिक प्रभाव होना भी सहज है। जबकि यह एक ऐसा केस है, जिसके उपचार से किसी को कोई प्रश्न

उठाने का अवकाश ही नहीं है।’

मुनि जी के कथन से भगवानश्री की झुंझलाहट रोष में बदल गई। मेज पर जोर से मुक्का मारते हुए बोले- ‘तुम भगवान की शक्ति में अविश्वास करने का दुस्साहस कर रहे हो। मैं सर्वशक्तिमान भगवान का साक्षात् अवतार हूँ। एक क्षण में सम्पूर्ण सृष्टि का प्रलय कर सकता हूँ। अभी कुछ ही महीनों पहले मैंने चन्द्रमा को कुपित नजरों से देखा, तो बेचारा चन्द्रमा थर-थर काँपता हुआ मेरी परिक्रमा करने लगा...।’

उसके बाद तो अपनी सर्वशक्तिमत्ता का अहसास कराने के लिए भगवानश्री पता नहीं कब तक क्या-क्या बोलते रहे। तभी बीच में उनके कुछ घुटे हुए भक्तों ने मुनि जी को उनकी गलती का अहसास कराते हुए कहा- ‘आप भगवान से टकराकर बहुत बड़ा खतरा मोल ले रहे हैं। यहां तो श्रद्धाभाव से ही लाभ उठाया जा सकता है। जिसने भी इस महान शक्ति में संदेह किया, उसने बड़ा नुकसान उठाया। फिर वे मुझे अनेक घटनाएं बताने लगे, जिनका उद्देश्य मुनि जी पर मनोवैज्ञानिक दबाव डालना था। मुनि जी बड़े धीरज के साथ सब सुनते रहे। उन सब बातों के अंत में कहा- ‘हाथ कंगन को आरसी क्या? मैं आपकी सब बातें मान लूंगा यदि भगवान इस रोग को अपने दिव्य स्पर्श से अच्छा कर देते हैं। अगर ऐसा नहीं हो पाता है तो मुझ पर इन डरावनी या लुभावनी बातों का कोई असर नहीं होने

वाला। ऐसी शाप भरी धमकियां मैंने खूब सुनी हैं। आखिर मैं भी आपकी बिरादरी का हूं, भीतरी छल-छद्म छुपे नहीं हैं।

यह वाक्य सुनते ही भगवान तो जैसे आपे से बाहर हो गए। क्रोध में गरजते हुए कमल भाई से कहा- 'तुम यदि अपने मुनि जी का भला चाहते हो तो अविलम्ब इन्हें यहां से ले जाओ। मेरे मुख से यदि कोई शब्द निकल गया तो कुछ भी अनिष्ट घट सकता है।'

मुनि जी को अभिशाप का कोई डर

नहीं था। किन्तु किसी प्रकार के कटु विवाद में भी उलझना नहीं चाहते थे। वैसे भी भगवान की अलौकिक शक्ति का खोखलापन जाहिर हो चुका था। इसलिए वहां और अधिक ठहरना उचित न समझकर वे वहां से चले आए। थोड़े ही दिनों में भगवान का पाखंड और भी खुलकर सामने आ गया, जब उन्होंने धनी-मानी लोगों से रुपये ऐंठने के कुटिल प्रयास शुरू किये।

x x x

-क्रमशः

उड़ती पतंगा री

मानव मंदिर की बालिकाओं द्वारा बड़े महाराज जी के जन्म-दिवस पर गाया गया भजन

जन्म दिवस रो उत्सव आयो आज
ढोल ढमाका बाजे देखो शहनाई पर नाज
जन्म दिवस रो उत्सव आयो आज
नाचा गांवा घूमर घाला मोद मनावं आज

(1)

आज तो ओ आछो अवसर मिलियो है म्हानै
घणा ही दिनां री आशा बतावां म्हे थानै
जन्म ह्यो चन्देरी में आपरो हो आज

(2)

सौने रो सूरज उग्यो सूरजमल रै आंगणै
हर्ष मनावै देखो झूलावै है पालणै

मोत्यां रो मेह वरस्यो छोटा दे र आंगणै
हर्ष मनावै देखो झूलावै है पालणै
देख्यां ही मन मोह म्हे मंगल गावां आज

(3)

नान्ही वय में दीक्षा लेकर कर्यो थे कमाल हो
लम्बी-लम्बी यात्रा करके रचयो नयो धमाल हो
सगलां रा मन जीत्या बै याद करै है आज
बड़े महाराज जी सब नै लागै घणां प्यारा
आशीर्वाद देवै है सबनै न्यारा न्यारा
मानव मंदिर रे बच्चां नै थां पर है नाज।

ज्ञानी कौन

दीपा के पापा रामशरण नाइट ड्यूटी करते थे। हर दिन रात को बजे दो बजे उनका काम खत्म होता था। शहर में लूटपाट की घटनाएं बढ़ गई थीं, इसलिए वह अकसर ऑफिस के मीटिंग हॉल में ही सो जाया करते थे और सुबह घर आते थे। उस रात वह अपना काम खत्म करके सोने जा रहे थे, तभी चपरासी राजू ने उनसे कहा, 'आज मीटिंग हॉल लॉक है, सर।'

राजू की बात सुनकर दीपा के पापा का मन खिन्न हो गया। वह काफी थके हुए थे और उन्हें नींद भी बहुत तेज आ रही थी, लेकिन समस्या यह थी कि वे सोएं कहां? मन मारकर वह एक टेबल पर लेट गए। कुछ देर में ही मच्छरों ने हमला करना शुरू कर दिया। उस दिन गर्मी काफी थी और पंखा भी खराब था। ऐसे में उनका सोना काफी मुश्किल हो रहा था। जब उन्हें नींद

नहीं आई, तो वे जाकर छत पर बैठ गए। हवा चल रही थी, इसलिए उन्हें कुछ राहत मिली। इसी बीच उनका मोबाइल बज उठा। दीपा का फोन था।

'हां बेटी।' रामशरण बोले।

'पापा आज आप आने वाले थे न? फिर...।' दीपा ने पूछा।

'आज बहुत थक गया हूं बेटी, इसलिए घर नहीं आया।'

'तो इस समय आप लेटे हैं?'

'कहां लेटा हूं? राजू ने बताया कि आज मीटिंग हॉल लॉक है, इसलिए आज लेटने की व्यवस्था नहीं बन पाई।'

'तो फिर, पापा?'

'छत पर बैठा हूं। इंतजार कर रहा हूं कि पांच बजे, तो घर आऊं।'

'लेकिन पापा, अभी तो ढाई ही बजे हैं। तब तक ऐसे ही बैठे रहेंगे?'

'तो क्या करूं, बेटी?'

'आपने हॉल का दरवाजा खोल कर देखा?'

'देखना क्या है? राजू ने बोला है, तो वह बंद ही होगा।'

'फिर भी एक बार देख तो लीजिए। हो सकता है कि खुला हो।' दीपा ने कहा।

'ठीक है, देखता हूं।'



रामशरण ने सोचा कि क्यों न चलकर हॉल का दरवाजा हिला-डुला लिया जाए। वह फौरन छत से नीचे उतरे और जाकर हैडिल घुमाया, तो दरवाजा खुल गया। उन्हें सुखद आश्चर्य हुआ। उन्होंने फौरन दीपा को फोन लगाया और हंसते हुए कहा, 'बेटी, तुमने सच ही कहा था। दरवाजा तो हाथ लगाते ही खुल गया।

दीपा को खुशी हुई। वह हंसकर बोली- 'ठीक है। आराम से सोइए। मुझे ऐसा लगा कि आप किसी परेशानी में हैं, इसलिए मैंने आपको फोन लगा दिया था।

'तुम्हें एकदम सही लगा था। आज तुमने मुझे एक बड़ी सीख दे दी। लेकिन वह आइडिया तुम्हें आया कैसे?' पापा ने पूछा।

'एक बार मैं नानी के घर गई थी, तो उन्होंने एक कहानी सुनाई थी। आपकी मुसीबत सुनकर मुझे वह कहानी याद आ गई।' दीपा ने बताया।

'क्या है वह कहानी? पापा ने पूछा।

'अभी आप आराम कीजिए। सुबह जब आप घर आएंगे, तो कहानी सुनाऊंगी।' दीपा बोली।

'हां, यह ठीक रहेगा। तुम भी सो जाओ, मेरी प्यारी बिटिया।' यह कहकर पापा ने फोन काट दिया।

अगले दिन रविवार था यानी छुट्टी। पापा घर पहुंचे, तो दीपा उन्हें देखकर खूब हंसी। उसने अपनी मम्मी को भी सारा हाल कह सुनाया था। मम्मी भी मुस्कराई।

चाय के दौरान दीपा ने कहानी सुनाई। तीन युवक काशी से पढ़कर घर लौट रहे थे। रास्ते रात हो गई, तो वे एक बूढ़ी औरत के घर में रुक गए। बूढ़ी औरत को जब यह पता चला कि वे लोग काशी से ज्ञान प्राप्त करके लौट रहे हैं, तो वह बेहद खुश हुई।

उसने उन्हें जलपान कराया और कुछ ज्ञान की बातें बताने का आग्रह किया। उन तीनों युवकों में से एक ने कई मंत्र सिद्ध किये थे मंत्रों से वह चुटकियों में किसी भी समस्या का निदान करने का दावा करता था। दूसरा अच्छा वक्ता था। लेकिन तीसरा सामान्य व्यक्ति था।

बूढ़ी औरत ने तीनों की बातें सुनीं। उसने सोचा कि क्यों न इनकी परीक्षा ले ली जाए।

वह बोली, मेरे धन्य भाग्य, जो आप लोग मेरी कुटिया में पधारे। अब मेरी एक समस्या का निदान कर दीजिए।

'क्या समस्या है?' मंत्र-साधक ने पूछा। 'मेरे भंडार कक्ष की चाबी खो गई है। आप लोग मेरा ताला खोल दीजिए।' बूढ़ी औरत ने कहा।

'अभी ताला खुल जाएगा।' भंडार कक्ष के जाकर वह युवक कोई मंत्र जपने लगा, लेकिन ताला हिला तक नहीं। अब दूसरे युवक की बारी थी। उसने प्रवचन देना शुरू कर दिया। देर तक वह तमाम ज्ञान की बातें कहता रहा, लेकिन बूढ़ी औरत की समस्या हल नहीं हुई। तीनों युवक की ओर बूढ़ी औरत बोली, 'अब आप अपनी विद्या का

इस्तेमाल कर लीजिए।’

वह युवक उठा। उसने थोड़ी देर ताले को गौर से देखा, और फिर उसे खींचा, तो वह खुल गया। दरअसल ताला बंद ही नहीं था। बूढ़ी औरत ने उनकी परीक्षा लेने के लिए उसे लटका दिया था।

सिद्ध पुरुष और प्रवचनकार की बोलती बंद हो गई। बस औरत ने उस

तीसरे युवक की सराहना करते हुए कहा, ‘अक्ल से काम ले, वही ज्ञानी।’

कहानी सुनकर दीपा के मम्मी-पापा बेहद खुश हुए।

पापा ने कहा, ‘सच कहा उस बूढ़ी औरत ने। कभी कहानियों से बड़ी सीख मिलती है। तुम्हारी इस कहानी ने मुझे मुसीबत से बचाया।’

—प्रस्तुति : साध्वी वसुमति

भाव-प्रधान समीक्षा

नित्य क्रम की सामायिक साधना में आपश्री द्वारा रचित पुस्तक “केवल तुम नहीं हो” का स्वाध्याय करते हुए रोम-रोम भाव विभोर हो उठा और मन अत्यंत हर्षित हुआ। आपश्री का चिंतन, काव्य लेखन, प्रस्तुतिकरण, भावार्थ, सांक्षिप्तिकरण इत्यादी तभी अपने आप में अद्वितीय और अतुलनीय है। यह पुस्तक आपकी भावपूर्ण काव्य रचनाओं का ऐसा महकता गुलदस्ता है, जिसकी महक पाठक के दिलोदिमाग पर सकारात्मक असर करती है। मैं आपश्री के गहन चिंतन, सूक्ष्म अनुप्रेक्षा, असीम पुरुषार्थ सहित आपकी पवित्र विचारधारा का अंतर्हृदय से अनुमोदना करता हूँ।

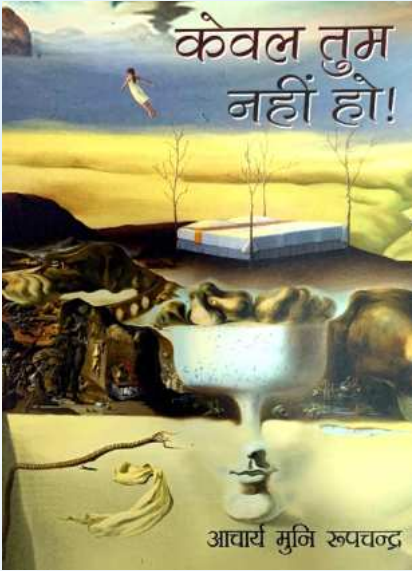
पुस्तक में जहाँ आपके अटूट महावीर प्रेम का विशाल पर्वत नजर आता है, वहीं सम्प्रदायवाद के विष से

खेदित आपकी वेदनाओं का गहरा समुन्दर भी दृष्टिगोचर होता है। धर्म के ठेकदारों और उनकी कुटिल चालों पर आपने अचूक शब्दों से निर्मित ब्रम्हास्त्र का प्रहार किया है। धर्म के नाम पर गलत परम्पराओं व आडम्बर जैसी भयंकर कुरीतियों पर आपने अपने भावों के उस दर्द को अंकित किया है, जिसे पढ़कर आँखों का छलकना स्वाभाविक है। कुल मिलाकर पुस्तक बहुपयोगी और बार-बार पठनीय सिद्ध हुई है। आपश्री की निर्भीक लेखनी ऐसे ही, मुमुक्षुओं का, भव्यजनों का मार्गदर्शन करते हुए, संघ समाज में, देश-विदेश में जिनवाणी की महान प्रभावना करती रहें, ऐसी मंगल भावना भाता हूँ।

—पी.एस. जैन

सुराना एण्ड सुराना इन्टरनेशनल अर्टोर्नीज

आचार्य मुनि रूपचन्द्र, विद्रोही जैन मुनि और सशक्त कवि



धर्म का रास्ता ही विद्रोह का रास्ता होता है। संसार से विद्रोह करके ही तो संन्यास लेते हैं। वैसे भी लकीर का फकीर होना परंपरा नहीं बल्कि निरंतर आगे बढ़ते जाना ही परंपरा होनी चाहिए। यह कहना है आचार्य मुनि रूपचंद्र का जो आज दिल्ली के मानव मंदिर में बातचीत कर रहे थे। उन पर विनीता गुप्ता ने “हंस अकेला” औपन्यासिक कृति की रचना भी की है। मुनि रूपचंद्र के पंद्रह काव्य संग्रह हैं। और ताजा कृति “केवल तुम नहीं हो” के रूप में आई है।

○ कमलेश भारतीय

मूल रूप से राजस्थान के सरदारशहर निवासी रूपचंद्र का बचपन आम बच्चों जैसा ही शरारतों भरा था। पतंगबाजी भी करते। पर तेरह वर्ष की आयु में सन् 1952 में आचार्य तुलसी से दीक्षा ली। फिर प्राकृत और संस्कृत भाषाएं सीखीं और धर्मग्रंथों का अध्ययन किया। हजारों मील की पदयात्राएं कीं। हिसार के प्रेम नगर में भी मानव मंदिर का निर्माण करवाया और वे हर वर्ष मार्च माह में पांच दिन के लिए प्रवास करते हैं।

• कविता में रूचि कैसे?

बचपन से ही। पाठ्य-पुस्तकों वाली कविताएं कंठस्थ कर लेता था।

• कौन से कवि प्रिय हैं?

हरिवंशराय बच्चन और महादेवी वर्मा। महादेवी वर्मा से इलाहाबाद पदयात्रा के दौरान मुलाकात भी की। मिला तो सूर्यकांत निराला से भी लेकिन वे अस्वस्थ थे। राजस्थान के कवि लेखक कन्हैयालाल सेतिया से। निरंतर कविता पर चर्चा करता रहता।

• पहला कविता संग्रह कब आया?

सन् 1966 में। भारतीय ज्ञानपीठ से- अंधा

चांद। बाद में आए काव्य संग्रहों का राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा व ज्ञानी जैल सिंह ने राष्ट्रपति भवन में विमोचन किया।

• आपकी कविताओं के अंश अनेक सांसद अपने भाषणों में प्रयोग करते हैं। वे सुना दीजिए।

नजर को बदलिए

नजारे बदल जाएंगे

सोच को बदलिए

सितारे बदल जाएंगे

कश्तियां बदलने की जरूरत नहीं

धार को बदलिए

किनारे बदल जाएंगे

और

देश को दुश्मनों से नहीं

गद्दारों से खतरा है

खजाने को चोरों से नहीं

पहरेदारों से खतरा है

धर्म की रक्षा के लिए

जरूरी है सावधानी

उसे नास्तिकों से नहीं
टेकेदारों से खतरा है।

• कविता लिखने की तरंग भक्ति में कैसे?

यह तो मॉनसून आने जैसी बात है।
मॉनसून आता है तो दस पंद्रह कविताओं
की रचना कर देता हूं।

• कविता लिखने बालों के लिए संदेश?
लिखने के लिए नहीं लिखों। भीतर से कुछ
उमड़े तब लिखों। एक बार अचानक
न्यूयार्क में जैन सेंटर के उद्घाटन पर तरंग
में कहा-

पहले तो हम पत्थर तराशते हैं

फिर उसमें परमात्मा तलाशते हैं

लेकिन जिसने तराशा है अपने आपको

उसको खुद भगवान तलाशते हैं।

कविता का उद्देश्य?

धर्म में दो पक्ष हैं। अध्यात्म और पंथ व
सम्प्रदाय। हमें अध्यात्म से जुड़ना है। यह
हृदय से निकलता है। हम अध्यात्म से जुड़ें।

कविता

तुम्हारे विश्वास का हमें अहसास नहीं,
हमारे अहसास का तुम्हें विश्वास नहीं,
विश्वास-अहसास जुदा होते, गम न था,
पर पास-पास होकर भी पास-पास नहीं।

-आचार्य रूपचन्द

सोने की थाली

यदि चरित्र सुंदर है, तो चेहरा चमकेगा। समाज की सेवा और ईश्वर की आराधना से उसकी सौजन्यता बनी रहेगी।

एक पुजारी एक मंदिर में भगवान की प्रतिमा के सामने, प्रतिदिन प्रार्थना किया करता था। हर दिन ईश्वर की मूर्तियों को स्नान कराने के बाद वह उन्हें नवीन वस्त्र एवं आभूषणों से सजाया करता था। उसके बाद, वह उन्हें ताजे फूलों से बनी माला अर्पित करता था और अपनी इस

सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान वह वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया करता था। एक दिन जब वह देवता की आराधना कर रहा था, एक थाली खड़खड़ाहट की आवाज के साथ देवता के सामने ऊपर से गिरी। पुजारी ने देखा वह थाली

सोने से बनी है। उस थाली में कुछ लेख भी अंकित था जो इस प्रकार था। इस थाली को मेरे सबसे महान भक्त को अर्पित किया जाए। पुजारी ने सोचा मैं दिनभर ईश्वर के नाम-जाप में बिताता हूँ। मैं देवताओं की व्यक्तिगत रूप से पूजा-अनुष्ठान करता हूँ। मैंने अपना सारा जीवन ईश्वर की सेवा करने में बिताया है। मेरे अलावा और कौन

महान भक्त होगा। यह थाली निश्चित रूप से मेरे और सिर्फ मेरे लिए है। वह थाली के पास गया लेकिन जैसे ही उसने थाली को स्पर्श किया, थाली मिट्टी के थाली में परिवर्तित हो गई। पुजारी हक्का-बक्का रह गया। उसने सोचा यदि किसी ने मुझे मंदिर से इस थाली को ले जाते हुए देखा तो वे मुझ पर हसेंगे। मुझे इस थाली की आवश्यकता नहीं है। मैं इसे वापस उसी स्थान पर रख

देता हूँ, जहां पर यह थी जैसे ही उसने थाली को वापस रखा।

वह थाली फिर से सोने में परिवर्तित हो गई। और जलते दीयों की रोशनी में चमकने लगी। पुँजारी यह सब देखकर चकरा गया।

उसी दिन बाद में पुजारी ने मंदिर के एक अन्य

पुजारी को उस सोने की थाली को उठाने को कहा। उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि वह सोने की थाली पुनः मिट्टी की थाली में परिवर्तित हो गई। पुजारी ने उससे उस थाली को वापस उसकी जगह पर रख देने को कहा। निःसंदेह वह थाली पुनः सोने की हो गई फिर एक बहुत धार्मिक व्यक्ति जो अक्सर



मंदिर में आया करता था, वहां आया। उसने चढ़ावे के रूप में एक बहुत बड़ी रकम देवता को भेंट की। पुजारी ने उस भक्त को एक मिनट के लिए उस थाली को उठाने के लिए कहा। पहले की तरह ही थाली साधारण मिट्टी के बर्तन में बदल गई। दिन ढलने लगा। पुजारी अधिक से अधिक बेचैन होता रहा। उसने एक आदमी को देखा जो कि मंदिर में सफाई करने की सेवा करता था। उसने उसे मंदिर के भीतर बुलाया और बोला मेरे मित्र उस थाली को उठाओ। वह आदमी उसकी ओर देखते हुए बोला उस सुनहरी थाली को भला मुझे क्यों उठाना है। मुझे इस तरह की वैभव की चीजों से कोई मतलब नहीं है। मुझे इसकी जरूरत भी नहीं है। पुजारी ने दोबारा कहा ठीक है, भले ही तुम्हें इसकी जरूरत नहीं है लेकिन एक बार मेरे कहने से तुम इसे उठाओ तो सही। उस आदमी ने थोड़ी नाराजगी भरे स्वर में कहा ठीक है, यदि मेरे

ऐसा करने से आपको खुशी होती है तो अवश्य ही मैं ऐसा करूंगा। ऐसा कहते उसे उसने थाली को उठाया। वह सोने की थाली पहले की तुलना में अधिक चमकने लगी पुजारी आश्चर्य से व्याकुल हो गया। यह वह आदमी है, जिसने अपनी सारी जिंदगी ईश्वर के इंसानों की सेवा में बिताई थी। उसने इस कथन का अनुकरण किया था, मानव सेवा ही माधव सेवा है। ईश्वर की आंखों में वह महानतम भक्त था।

वह आदमी उस थाली को वापस उसके स्थान पर रखकर मंदिर के बाहर की ओर घूमा। वह थाली उसके पीछे-पीछे डोलने लगी। इसके अलावा सोने और चांदी के वो तमाम सिक्के जो ईश्वर के सामने चढ़ाए थे, वे भी उसके पीछे-पीछे लुढ़कने लगे।

समृद्धि उस व्यक्ति के रास्ते का चुम्बन करती है जो बिना किसी इच्छा के ईश्वर से प्रेम करता है।

-प्रस्तुति : साध्वी कनकलता

कर्तव्य

- कायरता का निराकरण करने के लिए हिंसावृत्ति छोड़ें।
- गरीबी का निराकरण करने के लिए स्वामित्व-भाव छोड़ें।
- अन्याय का निराकरण करने के लिए सत्याग्रह करें।
- शासन का निराकरण करने के लिए सेवा को प्रभावी बनायें।
- असमानता का निराकरण करने के लिए बौद्धिक और शारीरिक श्रम का समान मूल्य मानें।

एक अनार के अनेक फायदे

अनार के बारे में कौन नहीं जानता? सारी दुनिया में अनार एक प्रचलित फल के तौर पर घरों के डायनिंग टेबल की शोभा बढ़ाता है। अनार के औषधीय गुणों की वकालत दुनियाभर के वैज्ञानिक भी खूब करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय जर्नल इविडेंस-बेस्ड कॉम्प्लिमेंट्री एंड आल्टरनेटिव मेडिसिन में हालिया प्रकाशित एक शोध रिपोर्ट के अनुसार दैनिक खाद्य शैली में एक गिलास अनार का रस अपनाकर 30 से 40 वर्ष (अधेड़ उम्र) के लोग और बुजुर्ग अपनी याददाश्त को बेहतर बना सकते हैं।

इस शोध को सत्यापित करने के लिए करीब 32 लोग जिन्हें याददाश्त को लेकर समस्याएं थीं, को रिसर्च विषय बनाकर एक शोध की गई और इस रिसर्च के दौरान इन लोगों को अनार के फलों के रस की एक गिलास मात्रा प्रतिदिन एक महीने तक दी गई। एक महीने के बाद जब परिणाम प्राप्त किए गए तो जानकारी मिली कि अनार जूस याददाश्त को बेहतर करने

के लिए अत्यंत कारगर है। अनार के जूस से याददाश्त में बेहतरी होने की शोध के अलावा अनार को एक बेहतर ब्रेन टोनिक भी माना गया है। शोधों से प्राप्त जानकारी के अनुसार अनार के जूस में न्यूरो-प्रोटेक्टिव गुण पाए जाते हैं अर्थात् इसके लगातार सेवन करने वाले व्यक्ति को ब्रेन हैमरेज जैसी घातक समस्याएं होने की संभावनाएं नगण्य हो जाती हैं और परिणाम ये भी बताते हैं कि एल्जिमियर्स रोग में भी यह फायदा करता है।

अनार का जूस कार्डियो-वेस्कुलर सिस्टम को बेहतर बनाता है अर्थात् यह ब्रेन की सेहत के लिए बेहतरीन होता है। माना जाता है कि ब्रेन से जुड़ी समस्याओं से ग्रस्त रोगियों को अनार का जूस जरूर पीते रहना चाहिए। अनेक शोध परिणामों से ज्ञात होता है कि माता के गर्भ में पल रहे बच्चे की बेहतर सेहत के लिए अनार जूस कारगर होता है, माना जाता है कि नाल में श्वसन क्रिया के दौरान कभी कभी होने वाले तनाव को रोकने में यह मददगार होता है। जोड़ दर्द अथवा आर्थरायटिस से ग्रस्त रोगियों के लिए अनार का जूस वरदान की तरह है, रोगियों को दिन में एक बार कम से कम 75 से 100 मिली अनार जूस जरूर पीना चाहिए, फायदा होता है।



शोध परिणामों से यह भी जानकारी मिली है कि अनार का रस प्रोस्टेट के दोहरेपन को रोकता है और प्रोस्टेट कैंसर कोशिकाओं को मारने में सक्षम होता है अतः प्रोस्टेट कैंसर की संभावनाएं होने या इसके होने के शुरुआती दौर में रोगी अनार का जूस पिलाना चाहिए, अत्यंत कारगर होता है। अनार का जूस शरीर में इंसुलिन की मात्रा को प्रभावित किए बगैर व्यक्ति के वजन कम करने में मदद करता है। खाली पेट प्रतिदिन अनार का जूस पीने से वसीय कोशिकाओं का अपघटन होता है और आहिस्ता आहिस्ता वजन कम होता है। प्रयोगशालाओं से प्राप्त क्लिनिकल परिणामों पर नजर डाली जाए तो जानकारी मिलती है कि अनार के दानों में एरोमाटेज नामक एंजाईम की क्रियाशीलता को कम करने का गुण होता है। दर असल एरोमाटेज एंजाईम एंज़ोजन को एस्ट्रोजन में बदलने का कार्य करता है जिससे अक्सर महिलाओं में स्तन कैंसर होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। सैकड़ों साल से आजमाए जाने वाले इस आदिवासी फार्मुलों के असर को वैज्ञानिक परीक्षण के तौर पर भी सिद्ध किया जा चुका है। स्ट्रेप्टोकोकस मिटिस और स्ट्रेप्टोकोकस संगस नामक बैक्टीरिया की वजह से ही जिंजिवायटिस और कई अन्य मुख रोग होते हैं और इनकी वृद्धि को रोकने के लिए अनार के छिलके बेहद असरकारक होते हैं।

क्या कहता है पारंपरिक हर्बल ज्ञान?

- ऐसा माना जाता है कि अनार के सेवन से शरीर में खून की कमी दूर हो जाती है और इसी वजह से यह हृदय के लिए भी खूब लाभदायक होता है। प्रतिदिन एक गिलास अनार का जूस पीने से सेहत तंदुरुस्त रहती है।
- आदिवासियों की मान्यता के अनुसार जिन महिलाओं को मातृत्व प्राप्ति की इच्छा हो, अनार की कलियां उनके लिए वरदान की तरह है। इन आदिवासियों के अनुसार अनार की ताजी, कोमल कलियां पीसकर पानी में मिलाकर, छानकर पीने से महिलाओं में गर्भधारण की क्षमता में वृद्धि होती है।
- लगभग 10 ग्राम अनार के पत्तों को आधा लीटर पानी में उबालें, जब यह एक चौथाई शेष बचे तो इस काढ़े से कुल्ला करने से मुंह के छालों में लाभ होता है।
- लगभग 50 ग्राम अनार के रस में छोटी इलायची के बीजों का चूर्ण (लगभग 1 ग्राम) और सोंठ का चूर्ण (लगभग आधा ग्राम) मिलाकर पीने से पुरुषों में पेशाब के साथ वीर्य जाने की समस्या में बहुत लाभ होता है।
- डाँग-गुजरात के आदिवासियों के अनुसार पेटदर्द और अतिसार में इसके पत्तों को अनारदानों के साथ पीसकर अदरक के रस के साथ मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

-अरुण योगी

मासिक राशि भविष्यफल-जुलाई 2019

○ डॉ. एन.पी. मित्रल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आर्थिक रूप से शुभ फल दायक है। किसी नई योजना में धन लगाना श्रेयस्कर नहीं है। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखने के लिये माह के उत्तरार्ध में प्रयास करना होगा। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध में अच्छा है। कहीं से धनागम का समाचार भी मिल सकता है तथा किसी नये कार्य की योजना भी बन सकती है। घर परिवार में कोई मांगलिक कार्य भी संभावित है। अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य का माह के पूर्वार्ध में विशेष ध्यान रखें।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रमसाय फलदायक है। अपने क्रोध पर काबू रखें। आय के नये स्रोत खुलने की संभावना है। कुछ जातकों को रूका हुआ धन भी प्राप्त हो सकता है। पत्नी की सलाह कारगर साबित होगी। समाज में मानहानि होने की स्थिति आ सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। परिवार तथा मित्रों में सामन्जस्य बना रहेगा।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय के साथ व्यय भी व्यापक रूप से होगा। कुछ जातकों को भूमि-भवन का लाभ संभावित है। घर-परिवार में कोई उत्सव संभावित है। कुटुम्बजनों का सहयोग मिलेगा। समाज में मान सम्मान बना रहे, इसके लिये आपको अपने क्रोध पर काबू रखना होगा।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर अच्छा फल देने वाला ही कहा जायेगा, फिर भी उत्तरार्ध की अपेक्षा पूर्वार्ध अधिक शुभ फल दायक है। उत्तरार्ध में कोई विशेष खर्चा होने की संभावना है। कुछ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना भी होगा, उस समय धैर्य से काम लें। परिवार तथा मित्रों में सामन्जस्य बना रहेगा।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते सफलता देने वाला है। कुछ जातकों के यहां चोरी आदि का भय है, सचेत रहें। शत्रु सिर उठाएंगे किन्तु वे अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पायेंगे। घर-परिवार के लोग सहयोग के लिए आगे आएंगे। बुजुर्गों का आदर-सत्कार आपके शुभ फल प्राप्त करने में सहायक होगा।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफलदायक है। आमदनी अच्छी तथा खर्च मध्यम स्तर का रहेगा। नई योजनाओं के बनने से मन में प्रसन्नता रहेगी। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। कुछ जातकों का लंबी दूरी की यात्रा का योग बनेगा, जो लाभ प्रद रहेगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अनुकूल फल देने वाला कहा जाएगा। किसी नवीन कार्य के प्रारंभ होने की भी संभावना है। इस कार्य में शत्रु आपका विरोध करेंगे। परंतु अन्ततः आप कामयाब होंगे। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। वाहन सावधानी से चलाएं अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य की अनदेखी न करें।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पर्याप्त आमदनी देने वाला होते हुए भी व्यायाधिक्य रहेगा। कुछ जातकों का भूमि, धन, भवन के मद में व्यय होगा। यात्राओं की भी अधिकता रहेगी तथा वाहन आदि से चोट लगने का भी भय है। परिवार जनों में कलह न हो इसके लिये प्रयासरत रहें। अपने गले को खराब होने से बचाएं। स्वास्थ्य कुछ नरम रहेगा।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय के लिहाज से अच्छा रहेगा लेकिन खर्चे भी मुंह बाए खड़े रहेंगे। कुछ जातकों का भूमि भवन की खरीद पर धन खर्च होगा। कुछ का व्यायाधिक्य अकारण भी हो सकता है। परिवार जनों में इस माह मन मुटाव संभव है। दाम्पत्य जीवन आमतौर पर सामान्य रहेगा।

कुंभ- कुंभ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह उत्तम फल देने वाला है। किसी भी नई स्कीम में धन का निवेश करते समय सोच विचार से काम करें या किसी योग्य व्यक्ति से सलाह लें। समारोहों या पार्टियों में खान-पान के प्रति सावधानी अपनाएं अतः अपने बलबूते पर ही कार्य करें। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

मीन- मीन राशि के जातकों को व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रमसाध्य लाभ देने वाला है। आपका आत्म विश्वास बना रहेगा। कुछ शत्रु सिर उठाएंगे पर आप उन्हें परास्त कर पायेंगे। कुछ नवीन लोगों के संपर्क आपके काम आएंगे। मित्र भी आपकी सहायता के लिये आगे आयेंगे। कुछ जातकों का रूका हुआ पैसा भी मिलने के योग हैं। परिवार जनों में अपेक्षित सामन्जस्य बना रहेगा। स्वास्थ्य कुछ नरम रहेगा।

-इति शुभम्

सौभाग्य से आप जागे हैं वापस न सो जाएं

-आचार्य रूपचन्द्र

अपनी विदेश-यात्रा से पूर्व 23 जून 2019 रविवार मानव मंदिर केन्द्र, नई दिल्ली में गुरु-पूर्णिमा पर्व के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में जन-समुदाय को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- आज का कार्यक्रम त्रिवेणी संगम है - (1) हमारी विदेश-यात्रा (2) पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्री जी का 85वाँ वर्ष-प्रवेश (3) आषाढी पूर्णिमा पर होने वाला गुरु-पर्व-पूजा। सबसे पहले गुरु-पर्व-पूजा पर यही कहना चाहूंगा, असली पूजा यह है आपको जो आत्म-दृष्टि मिली है, उसके प्रति निरंतर सजग रहें। भगवान महावीर ने अपने महानिर्वाण से पूर्व विशेष जोर देकर कहा-

**सुत्तेसु यावि पडिबुद्ध जीवि
न वीससे पाँडिए आसुपन्ने।**

अर्थात् सारा संसार मोह-निद्रा में सो रहा है। सौभाग्य से तुम जाग गए हो। तुम्हें आत्म-दृष्टि मिली है। किंतु सारे संसार को सोता हुआ देखकर तुम वापस सो मत जाना। बाहर की नींद उड़ना भी आसान नहीं होता। भजन, प्रवचन, सत्संग, मंत्र-पाठ करते हुए बहुत सारे साधक नींद में चले जाते हैं। फिर भीतर का मोह-नींद का उड़ना और भी मुश्किल है। भजन,

मंत्र-पाठ, दान सेवा ये सब आत्म-दर्शन/परमात्म-दर्शन के लिए होते हैं। किंतु यहां पर भी हम दर्शन की बजाय लगभग प्रदर्शन में चले जाते हैं। दर्शन आत्मा/परमात्मा का मार्ग है। प्रदर्शन संसार का मार्ग है। साधारण साधक तो क्या, मैं देख रहा हूँ बड़े-बड़े आचार्यों/महामुनियों के चातुर्मास जहां समाज की आत्म-यात्रा की प्रेरणा के लिए होने चाहिए, वे आडम्बर-प्रदर्शन और बैभव पूर्ण समारोहों की चकाचौंध में ही खो जाते हैं। दर्शन और प्रदर्शन के बीच बड़ी बारीक सी-रेखा होती है। उसके प्रति जागरूकता रहे, तभी हमारी आत्म-यात्रा परमात्मा तक जा पाएगी।

विदेश-यात्रा के बारे में इतना ही कहना चाहूंगा, यहां लगभग पंथ/संप्रदाय की आराधना प्रमुखता से होती है। वहां धर्म तथा अध्यात्म की प्रमुखता होती है। यहां की स्थिति यह है-

**स्थानक मिले मंदिर मिले, महावीर नहीं मिले।
अहं भरे बहुत आडम्बर मिले, महावीर नहीं मिले।
बहुत-बहुत खोजा हमने वीतराग महावीर को,
श्वेताम्बर मिले, दिगम्बर मिले, महावीर नहीं मिले,
वहां भी जैन समाज यही है, किन्तु
मनःस्थिति भिन्न है-**

स्थानक भी मिले, मंदिर भी मिले, महावीर भी मिले

पूजाएं मिली सामायिक संवर मिले,
महावीर भी मिले
वहां पर वीतराग संदेश की जिज्ञासा मिली
श्वेताम्बर भी मिले, दिगम्बर भी मिले,
महावीर भी मिले ।

वहां यह इसलिए संभव हो सका है क्योंकि वहां सारी पंथ/परंपराएं एक ही छत के नीचे अपनी-अपनी विधियों से प्रभु-आराधना करती हैं, सभी संत-पुरुषों/विद्वानों के प्रवचन एक समान जिज्ञासा-भाव से सुनती हैं। कहीं आग्रह नहीं, विवाद नहीं। परस्पर संवाद देखने को मिलता है। मेरा तो अनुभव यह है यहां समाज अपने पंथ और गुरुओं तक रह जाता है, वहां का समाज वीतराग धर्म और भगवान महावीर से जुड़ा हुआ है। विदेश और देश की धर्म-आराधना में यही सबसे बड़ा अंतर है।

पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्री जी के 85वें वर्ष-प्रवेश पर अपनी मंगल कामनाएं देते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा- आज आपके चौरासी वर्ष पूरे हो गए हैं। आपकी लगभग उनहत्तर वर्ष की संयम-साधना और 60 वर्ष की तपस्या (केवल दूध, लस्सी का आहार) तथा कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तथा कच्छ से लेकर कोलकाता तक इसी खुराक पर पद-यात्रा, उम्र भर असाध्य बीमारियों में से हंसते-हंसते गुजर जाना ये सब देखकर हम

कह सकते हैं चौरासी वर्ष की संपन्नता के साथ आपके चौरासी के चक्कर कट गए हैं। इस बार आपने बार-बार कहा- मेरे में ऐसा क्या है, जो मेरा जन्म-दिन मनाया जाए। इस पर इतना ही कहना है-

**फूलों को अपनी खुशबू का मान हो नहीं सकता
कोयल को मीठे गीतों का ध्यान हो नहीं सकता
महासतीजी, आप क्या हो, हमसे पूछो
वरना आपको अपना ज्ञान हो नहीं सकता।**

आप आरोग्यपूर्वक शतायु हों, सबको आपका आशीर्वाद मिलता रहे, यह मंगल भावना।

पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्री जी ने सभी की मंगल कामनाओं के उत्तर में कहा- आप सभी परमात्मा से जुड़े रहेंगे तो आपका कोई बाल भी बांका नहीं कर सकेगा।

**जाको राखे साइयाँ, मार सके ना कोय,
बाल न बांक्र कर सके, सब जग बैरी ह्येय।**

उपस्थित जन-समुदाय ने हर्ष-ध्वनि से महासतीजी का आशीर्वाद स्वीकार किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ पूज्य गुरुदेव के मंगल मंत्रों से हुआ। पूज्य गुरुदेव की विदाई, पूज्या महासती के 85वें वर्ष-प्रवेश की बधाई दोनों के लिए जन-भावनाएं हृदय से उमड़ रही थी। विद्वान-मनीषी संपतराय चौधरी, डॉ. विनीता गुप्ता, समाज-सेवी

श्रीमती प्रियंवदा तिवारी, महासचिव श्री आर.के. जैन, समाज-सेवी श्रीमती मंजुबाई जैन, श्रीमती निर्मला पुगलिया आदि ने अपने भाव-सुमन अर्पित किये। गुरुकुल की बालिकाओं ने साध्वी कनकलताजी द्वारा रचित मधुर गीतिकाएँ प्रस्तुत की। साध्वी समताश्री जी ने गुरुकुल की प्रगति के बारे में जन-समुदाय को जानकारी दी। अरुण योगी ने देश-विदेश में चल रही मानव

मंदिर मिशन के विभिन्न प्रकल्पों के बारे में बताया। प्रसाद ग्रहण के साथ प्रसन्न वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ। 26 जून सायं 6:15 बजे पूज्य गुरुदेव ने शिष्य अरुण योगी के साथ पूज्या प्रवर्तिनी महासती मंजुलाश्री जी, सहयोगी साध्वियां, मानव मंदिर गुरुकुल तथा स्टाफ-सदस्यों से विदेश-यात्रा के लिए विदाई ली।



-महासती मंजुलाश्री जी महाराज के जन्मोत्सव व गुरुपूर्णिमा समारोह के अवसर पर मानव मंदिर गुरुकुल की बालिकाएँ गीत प्रस्तुत करती हुई।



-इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज अपना मंगल प्रवचन प्रवचन करते हुए। साथ में हैं (बाएँ से) साध्वी समताश्रीजी महाराज, साध्वी कनकलताजी महाराज, महासती मंजुलाश्रीजी महाराज एवं श्री अरुण योगी जी।



-समारोह में उपस्थित भक्त जनों को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान करती हुए महासती मंजुलाश्रीजी महाराज।



-साध्वी समताश्री जी महाराज IFCA नेहरु प्लेस, नई दिल्ली में अध्यात्म पर अपना उद्बोधन देते हुए।
-इसी अवसर पर डॉक्टर आरिफ ने आयुर्वेद द्वारा स्वस्थ जीवन का गुर सिखाते हुए।



-अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर यू.ए.ई. दूतावास नई दिल्ली में योग करवाते हुए योगाचार्य प्रदीप जैन व शुभम जैन एवं छाया चित्र में दूतावास के कर्मचारी गण।



-दिल्ली पुलिस द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में श्री योगी अरुण जी योग-अभ्यास और प्राणायाम करवाते हुए। स्थान-निदेशालय होमगार्ड ग्राउण्ड, राजागार्डन, नई दिल्ली।



-भारत संचार मंत्रालय द्वारा आयोजित योग दिवस पर आहार और योग पर अपना व्याख्यान देते हुए श्री अरुण योगीजी एवं साथ में क्षेत्रीय डाक विभाग के महाप्रबंधक श्री राजेंद्र प्रसाद, योगाचार्य शिवम् झा एवं योगगुरु आचार्या मीतूजी एवं योग अभ्यासियों के साथ एक सामूहिक छाया चित्र।



-अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के शुभ अवसर पर योग कक्षा के पश्चात योग-अभ्यासियों के साथ श्री अरुण योगी एवं योगाचार्य श्री सुजीत कुमार झा। स्थान-इण्डियन ऑयल का क्षेत्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली।



—पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज के पावन सानिध्य में न्यूजर्सी, अमेरिका के योग-साधक पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए, साथ में हैं श्री अरुण योगीजी। स्थान-श्री हेमेट्र दक्षा पटेल, हाउस, लिविंगस्टन, अमेरिका।



—अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से ओत-प्रोत यूरोपीय राष्ट्र लातविया में अरुण योगी ब्रह्म-क्रिया करवाते हुए एवं सामूहिक छाया-चित्र में योग-अभ्यासियों के साथ श्री अरुण योगीजी एवं डॉक्टर सोहन वीर सिंह जी।

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज और अरुण योगी जी का अमेरिका और कनाडा यात्रा विवरण

1. 26 जून 2019 - 2 जुलाई 2019 लिविंगस्टन, न्यूजर्सी
2. 2 जुलाई 2019 - 8 जुलाई 2019 लॉस-एंजलस कैलिफोर्निया
(जैना कन्वेंशन)
3. 8 जुलाई 2019 - 15 जुलाई 2019 सेन होजे, कैलिफोर्निया
4. 15 जुलाई 2019 - 18 जुलाई 2019 डलास, टेक्सास
5. 18 जुलाई 2019 - 22 जुलाई 2019 मिडलैंड, टेक्सास
6. 22 जुलाई 2019 - 24 जुलाई 2019 ऑस्टिन, टेक्सास
7. 24 जुलाई 2019 - 31 जूलाई 2019 ह्युस्टन, टेक्सास
8. 31 जुलाई 2019 - 8 अगस्त 2019 बॉस्टन, मैसाचुसेट्स
9. 8 अगस्त 2019 - 12 अगस्त 2019 न्यूजर्सी सिद्धाचलम्
10. 12 अगस्त 2019 - 16 अगस्त 2019 बर्लिंगटन, वरमोंट
11. 16 अगस्त 2019 - 20 अगस्त 2019 ऑरलैंडो, फ्लोरिडा
12. 20 अगस्त 2018 - 23 अगस्त 2019 इंगलवुड, न्यूजर्सी
13. 23 अगस्त 2019 - 3 सितम्बर 2019 न्यूयार्क सिटी, न्यूयार्क
(पर्युषण पर्व-आराधना)
14. 3 सितम्बर 2019 - 5 सितम्बर 2019 डिट्रॉईट, मिशिगन
15. 5 सितम्बर 2019 - 7 सितम्बर 2019 विंडसर, ओंटारियो, कनाडा
16. 7 सितम्बर 2019 - 9 सितम्बर 2019 लंडन, ओंटारियो
17. 9 सितम्बर 2019 - 12 सितम्बर 2019 टोरंटो, कनाडा
18. 12 सितम्बर 2019 -16 सितम्बर 2019 मॉन्ट्रियल, क्यूबेक, कनाडा

16 सितम्बर 2019 को कनाडा से भारत वापसी संभावित



P. R. No.: DL(S)-17/3082/2018-20

Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

Date of Post : 27-28

हर्बल-प्रसादम्

19 जड़ी बूटियों से निर्मित चाय

मधुमेह और वजन को नियंत्रित करने में सहायक

मिश्रित आयुर्वेदिक व हर्बल तत्वों का विवरण-

- स्टीविया ■ ग्रीन-टी ■ गुड़मार ■ अमृता (गिलोय)
- त्रिफला (ऑवला, हर्ड व बहेड़ा) ■ मेथी ■ स्नॉय पत्ती



- अजमोथा ■ पिप्पलि ■ अजवायन ■ जामुन के बीज का सत्त
- तुलसी ■ अदरक ■ जीरा ■ काली मिर्च ■ नीबू का सत्त ■ लवण

अनेकों रोगों के निवारण का एक मात्र सूत्र

हर्बल प्रसादम् के फायदे-

वात, पित्त, कफ, त्रिवेध नाशक, वजन को नियंत्रित करता है। रक्त संचार को सुचारु करने वाली, रक्तचाप, शुगर, सिर दर्द, कब्ज, डिप्रेशन, अनिद्रा, जोड़ों का दर्द, गाठिया, गैस, पित्त, कफ, एलर्जी, अस्थमा, गांठ बनना, साइनस, नजला, गले की खरास, थाईराइड आदि अनेकों बिमारियों को ठीक करने में सहायक। शरीर के अंदर मौजूद विषाक्त तत्वों (टॉक्सिन) को साफ कर रक्त शोधन करता है जिससे चेहरे पर काली और तेज झलकता है। कैंसर जैसे भयंकर बिमारियों को होने से बचता है और यदि हो गया है तो ठीक करने में मददकारी। क्योंकि इसमें है 19 आयुर्वेदिक हर्बल औषधियों का मिश्रण।

बनाना बहुत ही आसान- सिर्फ एक कप (100ml) खौले पानी में एक टी बैग डाले बस तैयार।

यह चाय नहीं हर्बल औषधि है

नोट- एक बार हर्बल प्रसादम् का सेवन जरूर करें। पहले हर्बल प्रसादम् कोरियर द्वारा मंगाएं, 3 दिन सेवन करें उसके बाद पैसे दें। यदि पसंद नहीं आया तो पैसा नहीं लेंगे। आर्डर के लिए संपर्क करें- (+91) 9868-99-0099 E-mail : order@herbalprasadam.com Website : www.herbalprasadam.com

स्वाद, स्वास्थ्य और सेवा की त्रिवेणी

आय का उपयोग जरूरतमंद, बेसहारा, विकलांग, अनाथ बच्चों व माताओं के लिए होता है
All Proceeds go to Orphans, Needy, Handicapped Children and Women

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
के.एच.-57 जैन आश्रम, रिंग रोड, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,
पो. बो.-3240, नई दिल्ली-110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1
से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया